Vol 6 Issue 4 May 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 4 | May - 2016

Indian Streams Research Journal

अहमदबख्श थानेसरी रामायण में सामाजिक समरसता

कृष्ण चन्द रल्हाण
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी , डी.ए.वी. कॉलेज, पूण्डरी (कैथल)
पूर्व कुलसचिव, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

प्रस्तावना :

साधारण बोलचाल में हम समाज को व्यक्तियों का समूह कहते हैं। किसी भी व्यक्ति को ज्ञात नहीं है कि उसका जन्म कब, कहां और किस मां के गर्भ में होगा लेकिन जब उसका जन्म हो जाता है तो वह एक विशेष समाज, विशेष जाति, विशेष धर्म, विशेष समुदाय और विशेष क्षेत्र में बंट जाता है। कुछ दिन के बाद वह बोलने लगता है, समझने लगता है, फिर उसकी मां उसे बताने लग जाती है उसकी जाति कौन सी है, उसका धर्म कौन सा है, उसका समुदाय कौन सा है, वह किस समाज का हिस्सा है। व्यक्ति समाज की एक इकाई है लेकिन जब वह समूह में परिवर्तित होता है तो समाज कहलाता है। श्री विद्याभूषण और डी. आर. सचदेवा ने लिखा है – ''समाज उत्पत्ति के सिद्धान्तों में से एक दैवी उत्पत्ति के सिन्द्धान्त के अनुसार जिस प्रकार भगवान ने संसार में अन्य जड़ और चेतन वस्तुएं पैदा की हैं उसी प्रकार समाज का भी निर्माण किया है।''[9] व्यक्ति मूलतः स्वभाव से स्वार्थी होता है, वह एक-दूसरे का शत्रु होता है। यह प्रवृत्ति उसमें जन्म से है, लेकिन यह प्रवत्ति उसमें बलवति तब हुई जब वह आदिकाल से समझ काल या भौतिककाल में प्रवेश करने लगा। तब उसने अपनी इस प्रवृत्ति के दुष्परिणामों से बचने के लिए अपने आप को समाज में संगठित किया। भारतीय समाज सदियों से धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा, वर्ग, समुदाय के आधार पर बंटा हुआ है। भारत में इतनी विविधताएं हैं, जिनके होते हुए कोई कल्पना नहीं कर सकता कि भारतीय समाज प्रेम-प्यार, भाईचारे, आपसी सौहार्द और सद्भावना से रहता होगा। इसका कारण है भगवान् राम, जिनके चरित्र पर भारत की लगभग सभी भाषाओं और बोलियों में रामायण लिखी जा चुकी। भारत के किसी भी भूभाग का रहने वाला या भाषा को बोलने वाला व्यक्ति, वह राम की कथा को उसी प्रकार जानता है, जिस प्रकार अन्य भूभाग में रहने वाला और अन्य भाषा को बोलने वाला व्यक्ति जानता है। भारतीय जनमानस में घुली-मिली यह रामकथा निःसन्देह भारतीय समाज को जाति-पाति, धर्म, भाषा, समुदाय, क्षेत्र, वर्ग आदि में विभाजित होने के बावजूद भी एकता के सूत्र में पिरो कर रखती है। आपसी भाईचारे, सद्भावना और विशेषकर सामाजिक समरसता की प्रेरणा देती है। इसी सामाजिक समरसता की उदाहरण है – अहमदबख्श थानेसरी की हरियाणवी 'रामायण'।

अहमदबख्श थानेसरी का जन्म कला-प्रवण कंचन जाति में सन् १८५० में हुआ। कला-प्रदर्शन के माध्यम से अपनी आजीविका कमाना इस जाति का प्रमुख व्यवसाय था, किन्तु सांग-कला अहमदबख्श का व्यवसाय न होकर शौक था। इन्होंने स्वातः सुखाय एवं लोकरंजन के लिए सांग लिखने और खेलने का बीड़ा उठाया। इन्होंने रामायण, जयमल-फत्ता, गूगा चौहान, सोरठ, चंद्रकिरण, कृष्ण-लीला, नवलदे आदि सरस सांगों का सर्जन एवं मंचन किया। अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' के सम्पादक श्रीबालकृष्ण मुज्तर के अनुसार कवि स्वयं रंगमंच पर अभिनय करने वाले कलाकार थे। जैसा कि उनकी 'रामायण' का अध्ययन करने से भी ज्ञात होता है कि कवि ने नाट्य का इतना सहज एवं यथार्थ वर्णन प्रस्तुत किया है कि जिससे उनको अभिनेता मानना स्वाभाविक है। कवि अहमदबख्श के सामयिक इसी परम्परा में कुछ और कवियों का भी उल्लेख मिलता है, जो अधिकंशतः ब्राह्मण थे किन्तु अहमदबख्श ही ऐसे अपवाद हैं। मुसलमान कवि होते हुए भी हिन्दू कथाओं एवं रूढ़ियों को अपनाया है और उनको काव्य रूप

प्रदान किया है। अहमदबख्श थानेसरी का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली था। इनका गौरवर्ण, सौम्य स्वभाव एवं हँसमुख चेहरा अनायास ही किसी को भी अपना बना लेता था। धवल-उज्जवल धोती-कुर्ता, काले जूते और सिर पर जरीदार टोपी इनके व्यक्तित्व को और भी निखार देती थी। हिन्दी और उर्दू दोनों ही भाषाओं पर इनका समान अधिकार था। ये ज्योतिषशास्त्र में भी सिद्धहस्त थे। मुसलमान होते हुए भी हिन्दू धर्मशास्त्रों की व्यापक जानकारी तथा हिन्दू देवी-देवताओं के प्रति अटूट आस्था, इनकी उदारता का पुष्ट प्रमाण है।

अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' हरियाणवी में प्रकाशित प्रथम रामाकाव्य है। इससे पूर्व हरियाणवी लोकसाहित्य में रामकथा के पात्रों का यथा सम्भव नाम तो आया है, किन्तु समूची कथा को काव्य रूप प्रदान करने का श्रेय सर्वप्रथम अहमदबख्श को ही जाता हैं। हालांकि यह 'रामायण' देवनागरी लिपि में रचित है, किन्तु हरियाणवी बोली पर आधारित है। प्रस्तुत रचना कुरुक्षेत्र निवासी उर्दू और हिन्दी के विद्वान बालकृष्ण मुज़्तर के सम्पादन में हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ द्वारा सन् १९८३ ई. में प्रकाशित की गई है। इसका रचनाकाल प्रकाशन के लगभग एक सौ वर्ष पूर्व था यानि इसे हम भारतेन्दु युग की रचना कह सकते हैं। विवेच्य 'रामायण' छः काण्डों में विभाजित है और १६७३ चम्बोलों में अनुबन्धित हैं। साहित्यिक दृष्टि से यह रचना सांग-शैली के अंतर्गत आती है।

बाकी देश की तरह हरियाणा के लोग भी विभिन्न जातियों, धर्मों, समुदायों, वर्गों और क्षेत्रों में बंटे हुए हैं। यहां भी सदियों से लोग आपसी प्रेम-प्यार, भाई-चारे, सद्भाव और सामाजिक समरसता से जीवन व्यतीत करते आ रहे हैं। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पावन धरती वाले हरियाणा के वीर योद्धाओं ने महाभारत के युद्ध में अस्त्र-शस्त्र उठाकर धर्म का साथ देकर अपने कर्त्तव्य का पालन किया था। १८५७ की क्रान्ति का श्रीगणेश भी हरियाणा के अम्बाला छावनी से हुआ था। जब-जब भी देश पर संकट आया हरियाणा के वीर बांकुरे अपना बलिदान देने से पीछे नहीं हटे। हरियाणवी समाज में वीर भावना के साथ-साथ सामाजिक समरसता की भावना भी कूट-कूट कर भरी हुई है। हरियाणवी समाज को छत्तीस बिरादरी का समाज कहा जाता है। यहां की छत्तीस बिरादरी आपस में एक-दूसरे के सुखों और दुखों में सम्मिलित होती आई है। हरियाणवी समाज में आपसी रिश्तों की मजबूती इतनी है कि सब लोग दादा, ताऊ, चाचा, भाई, बहन, दादी, ताई, चाची को रिश्तों के अनुसार सम्बोधित करके बुलाते हैं। रिश्तों की यह मजबूती केवल एक ही जाति में नहीं है बल्कि एक जाति के लोग गांव में रहने वाली दूसरी जाति के रहने वाले लागों को भी इन्हीं रिश्तों के नाम से पुकारते हैं। यहां तक कि स्वर्ण जाति के लोगों द्वारा दलित जाति के लोगों को भी इसी प्रकार सम्बोधन किया जाता है। इससे बड़ी सामाजिक समरसता देश में शायद अन्य कहीं देखने को मिलती हो। लेकिन हरियाणा में पिछले दिनों यानि फरवरी मास में आरक्षण के नाम पर जो लूटपाट, आगजनी, जातीय हिंसा देखने को मिली है उससे मन पर भारी आघात पहुंचा है। कुछ असामाजिक तत्वों ने सदियों से चली आ रही सामाजिक समरसता को तार-तार कर दिया है। एक जाति के लोगों में दूसरी जाति के लोगों प्रति इतनी घृणा पैदा हो गई है जिसको दूर करना कठिन हो गया है। कई लोगों की जानें चली गई, कई लोगों के प्रतिष्ठान जला दिये गए, यहां तक कि कई लोगों के घर तक जला दिये गए। इस खेल में राजनैतिक लोग भी पीछे नहीं रहे, खूब आरोप-प्रत्यारोप चलते रहे। आज तक भी आरोप-प्रत्यारोपों का दौर जारी है। प्रदेश में पुनः आपसी भाई-चारे, प्रेम-प्यार, सद्भावना और सामाजिक समरसता को बहाल करने के लिए समाज के प्रतिष्ठित लोगों और साधु सन्यासियों द्वारा सद्भावना सम्मेलन किये जा रहे हैं। यहां पर मैं अहमदबख्श थानेसरी की हरियाणवी 'रामायण' से सामाजिक समरसता के कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूं जो उन असामाजिक तत्वों के लिए सन्देश है जिन्होंने हमारे हरे-भरे हरियाणा के लोगों के मनों में जहर भरा है।

श्रीराम के विवाह की नाई द्वारा चिट्ठी लाने से लेकर सीता की डोली ले जाने तक के समूचे प्रसंग को 'रामायण' में यथावत हरियाणा के किसी छोकरे एवं छोकरी के विवाह के समान चित्रित किया गया है। हरियाणा में सदैव 'पंचों' का सम्मान रहा है, उनको पंच परमेश्वर कहा जाता है। वह 'पंच' आपसी भाई चारे और प्रेम के लिए कार्य करते हैं। गांव में जब भी आपस में किसी का झगड़ा होता है तो यही 'पंच' उसको निपटाते हैं। यही 'पंच' समाज में सामाजिक समरसता पैदा करते हैं। राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह में जो मंडा चढ़ाया है उसमें 'पंचों' को सम्मिलित किया गया है –

''मंडा चढ़या जनक ने बुला बिठाए पंच
सीता का कंगणा बंधा खिल गया रूप अटंच
जानो साक्षात लक्ष्मी बिराज रही
सब देवांगना महलों में धर रूप स्त्रियां आज रही
चल ले बारात नृप सबके साथ जहां दशरथ महाफिल साज रही
एक सहस्त्र अशरफी अश्व बहुत दस गज रथ बेअन्दाज रही
मुकताल
हुई सिमधी से मिलाई जनक शाबाशी पाई
चलो जल्द ढुकाओं राव क्यों देर लगाई।।[२]

अहमदबख्श थानेसरी 'रामायण' में राम के विवाह के समय उनकी बारात में विभिन्न जातियों को सम्मिलित कर सामाजिक समरसता और आपसी सद्भावना का परिचय दिया है –

''कुल राम भाट नगरी के जाट अपसरा साठ गन्धर्व

आठ नक्काल तो एक हजार हुए।''[३]

इसके अतिरिक्त राम की बारात में छत्तीस जातियों के लोगों को सम्मिलित करना, उन लोगों को जातीय सद्भावना और आपसी प्रेम-प्यार का सन्देश दिया है जो समाज को पैंतीस बिरादरी या छत्तीसवीं बिरादरी का अलग-अलग नारा देते हैं। यह उन लोगों को भी एक करारा सन्देश है जिन्होंने पिछले दिनों हरियाणा में आगजनी, लूटपाट और जातीय हिंसा की है। अहमदबख्श थानेसरी 'रामायण' ने तो स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय में ही इस एकता का सन्देश दे दिया था। कम से कम यह उपद्रवी लोग इस 'रामायण' का अध्ययन कर लें और विशेषकर इस चम्बोले को पढ़ लें -

''खचरें लादी, द्रव्य की ले वाशिष्ठ गुरु को साथ
चढ़ रथ धोंस बजा दई सारी चली बारात
लगी नहीं सात चढ़े सुख साथ
हैं छत्तीस जात भूप मुस्कात चले हुए जाते हैं।[४]

अहमदबख्श थानेसरी द्वारा राम की बारात में विभिन्न जातियों के लोगों को सम्मिलित करना हरियाणा की उस सामाजिक सौहार्दता का सूचक है, जहां समाज की विभिन्न जातियां किसी के भी सुख और दुख में एक साथ एकत्रित हुआ करती थी। हरियाणा इस बात का साक्षी है कि यहां के मेहनतकश लोग छल-प्रपंच और प्रतिद्वन्द्विता से कोसों दूर थे। ये लोग आपस में प्रेम, विश्वास और भाईचारे से जुड़े हुए थे। ये लोग दूसरे का दुख देख नहीं सकते थे। यही करण है कि राम के वनवास पर उनको यह खबर बिच्छू के काटने के समान कष्टदायक लगी, यथा -

''हुई खबर राम वनवास की हुए नगर नर तंग
जैसे बिच्छू काटत एक जगह पीर हो सब अंग
बहुत गिर धरण मूर्छा खान लगे
बहुत सिर पीट-पीट रोवत कैकेई का बुरा मनान लगे
बहुते नर ज्ञानी हा बानी-बानी कर भावी पर बल जतान लगे।''[५]

जिस काल में अहमदबख्श थानेसरी ने 'रामायण' लिखी यानि नवजागरण काल में, भारती इतिहास के अंग्रेजी साम्राज्यकाल में जाति-पाति का भेदभाव अत्यन्त गहरा था और समाज में छुआछूत की भावना फैली हुई थी। समाज में दलितों के प्रति अनादर का भाव था। ऐसे समय में श्रीराम अपने वनगमन के समय गंगा नदी के तट पर अपने मित्र भालों के सरदार श्रृंगवीर नगर के राजा निषादराज गुह से मिलते हैं। निषादराज गुह के यह कहने पर कि प्रभु आप मेरे नगर में राज करो और मैं आपका दास बनकर रह लूंगा, श्रीराम कहते हैं और निषादराज गुह को मित्र कहकर सम्बोधित करते हैं, यथा -

''अरे मित्र तैं सच कहा भीलों के सरदार
फिर हम बेबस क्या करें पिता बचन आधार
हुकम नहीं नगर में बढ़ने का
न हुकम नृपति अन्न खाना न हुकम सेज पर चढ़ने का
न हुकम वस्त्र-भूषण धारण न हुकम धरण पर पड़ने का
मुनियों समरूप सरूप यही नित हुकम बाना तनज ड़ने का
मुकताल
हंस हंस समझावे कौन विधि तुम संग जावे
बरस चौदां पिता बात छोड़ कैसे सुख पावें।''[६]

अपने मित्र श्रीराम की व्यथा सनुकर निषादराज गुह जाति-पाति के सारे बन्धन भूलकर एक सच्चे मित्र की भांति अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं, यथा -

''सुनत बिथा भगवान की निषादपति अकुलाए
ला शीशम वृक्ष के तले दिया डेरा लगवाए
दुरबा कुशा दिनी तले बिछाने को
फिर कर मन श्रद्धा कंद मूल फल फूल लाया है खाने को
खापी हुई रात प्रभू सोये लक्ष्मण लगे चरा दबाने को
एक तरफ भूप गुह सुमन्त्र संग आ बैठे हरि गुन गाने को
मुकताल

रात्रि अधछाई नींद मंत्री ने आई
गुह राजा प्रभु दुख देख हो रहा दुखदाई''[७]

श्री राम, सीता और लक्ष्मण सहित अपने मित्र निषादराज गुह से आज्ञा लेकर गंगा नदी के तट पर आ जाते हैं और केवट से पार लगाने के लिए कहते हैं। केवट गरीब व्यक्ति है, निम्न जाति का है, उसने सुना हुआ था कि राम ने एक पत्थर को छूकर महिला बना दिया था। इसलिए वह श्रीराम की आवाज सुनकर , हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और कहने लगा तिक पहले वह उनके पांव धोऊंगा फिर नाव पर चढ़ाऊंगा यहां पांव धोने के दो कारण हैं – एक तो भगवान के प्रति केवट की श्रद्धा भक्ति और दूसरा भगवान के पांव छूने से उसकी काठ की नाव भी महिला न बन जाए, जिससे उसका रोजगार छिन जाएगा। केवट के यह मधुर शीतल वचन सुनकर श्री राम कहने लगे, यथा –

''सुनत मधुर शीतल बचन नावड़िए की टेर
देख सिया लक्ष्मण तरफ प्रभु हंसन लगे मुख फेर
फेर कहते केवटिया प्यारे से
तेरी रह जा नाव नहीं बिगड़े जो हम पग धूल पखरे से
बेशक धो चरण कहें क्या हम जो माना खौफ हमारे से
फिर देर न कर झट पार लखा इस गंगा निकट किनारे से
मुकताल
केवटिया प्यारे खड़े हम पास तुम्हारे
चढ़ा नाव धो चरण देर ज्यादे मत लरे''[८]

श्रीराम द्वारा पांव धोने की आज्ञा प्रदान करने पर केवट गंगा जल से श्री राम के पांव धोता है और स्वयं को स्वर्ग का भागी बन जाता है। सामाजिक समरसता के इस दिव्य अवसर पर देवगण भी पुष्प वर्षा करते हैं, यथा –

''होत मगन मल्लाह ने लिया गंगा जल हाथ
पकड़े पग सिया प्रभू लखन के बड़े प्रेम के साथ
चरण धोकर पग शीस निवाता है
ऊपर से देव पुष्प गेरे ले चरणोदक घर आता है
परिवार सहित सब पी पी पतरों को स्वर्ग पहुंचाता है
फिर बिठला नाव पर चारों को कर फुर्ती पार लगाता है
मुकताल
श्रद्धा घट भारी मल्लाह ने अर्ज गुजारी
ले डंडौत प्रणाम सिया लक्ष्मण बनवारी''[९]

समाज में यदि समरसता और भाईचारा हो तो न केवल मनुष्य का जीवन सुखी होता है बल्कि समाज ओर देश भी उन्नति करता है। अहमदबख्श थानेसरी ने राम द्वारा उसकी कुटिया में पहुंच कर शबरी के प्रति प्रेम दिखाकर सामाजिक समरसता और दलित प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने शबरी के माध्यम से जाति-पाति की निस्सारता का पर्दाफाश करते हुए समाज में फैली छुआछूत की भावना के खिलाफ लोगों में जागृति उत्पन्न की। जब श्रीराम शबरी के आश्रम में पहुंचते हैं तो शबरी अत्यन्त आनन्दित होती है और श्री राम को अपने आश्रम में आसन पर बिठाकर उनकी सेवा करती है और कहती है कि वह अवगुण से भरी हुई है इसलिए नीच जाति में होने का पाप भुगत रही है। इस पर श्री राम शबरी को कहते हैं कि जो ब्राह्मण पतित हो गया, वह ब्राह्मण नहीं रह जाता और जो शूद्र भगवान का भक्त है, वह शूद्र नहीं रह जाता, यथा –

''भीलनी बड़ीयाई है भक्त को चाहे शूद्र का जाम
जे ब्राह्मण हो गया पतीत वह ब्रोह्मण किस काम
वेद का कर्म जौन को नहीं जाना
कुलहीन कुवर्ण शूद्र संज्ञा पवित्र न उसका इकदाना
निर्गुण का द्रोही वरण शंकर न देना उसको न खाना
जैसे मृग चर्म राज काठी वृथा बिन कर्म ब्राह्मण यूं माना
मुकताल
भक्ती का नाता नहीं बल धन कुल चाहता
तू भीलनी कहाँ नहीच तुझे बस किए विधाता।''[१०]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अहमदबख्श थानेसरी जाति-पाति, सम्प्रदाय और धर्म की संकीर्ण सीमाओं के बन्धन से मुक्त थे। वह सम्पूर्ण लोकरंजन और लोककल्याण के लिए समर्पित थे। उनकी 'रामायण' ऐसे समय में हरियाणा के लोगों को सामाजिक समरसता का अमृत पिला रही थी जब देश अंग्रेजी साम्राज्यवाद से ग्रस्त था। निःसन्देह यह 'रामायण' सामाजिक समरसता का महाकाव्य है। आज भी यह उतना ही प्रांसगिक है जितना उस समय था, जब यह लिखा गया था।

सन्दर्भ :

१.समाजशास्त्र के सिद्धान्त, विद्याभूषण एवं डी.आर. सचदेवा, किताब महल, इलाहाबाद, १९७९, पृ. ८०
२.रामायण, अहमदबख्श थानेसरी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, १९८३, चम्बोलो-३२३, पृ. १३३
३.वही, चम्बोला-३२१, पृ. १३२
४.वही, चम्बोला-३२२, पृ. १३२
५.वही, चम्बोला-९८, पृ. १७८
६.वही, चम्बोला-१६२, पृ. २०२
७.वही, चम्बोला-१६३, पृ. २०३
८.वही, चम्बोला-१७९, पृ. २०९
९.वही, चम्बोला-१८०, पृ. २०९
१०.वही, चम्बोला-२१७, पृ. ३५९
११.हरियाणा की लोकधर्मी नाटय परम्परा, डॉ. पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, १९८३
१२.लोक संस्कृति के क्षितिज, पूर्णचन्द शर्मा, संजय प्रकाशन, अशोक विहार, दिल्ली, १९८७
१३.हरियाणा के सांगों में सौनदर्य निरूपण, डॉ. विजयेन्द्र सिंह, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, १९८८
१४.हरियाणवी लोकधारा, स. डॉ. रामपत यादव एवं डॉ. बाबूराम, प्रकाशन विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, २००४

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org